M.A. Semester - 01
Philosophy - 03

Prof. Ragini Kumari
Prof & Head
P.G. Dept of Philosophy
Maharaja College, Ara

## अरस्तू के अनुसार Form और Matter की संक्षिप्त विवेचना (पार्ट-III)

अरस्तू के अनुसार शुद्ध द्रव्य जो सभी वस्तुओं में निहित रहता है, वह निरपेक्ष रूप से गुण रहित रहता है एवं अनिश्चित होता है। वस्तु के, गुण के अन्तर का कारण द्रव्य नहीं बल्कि स्वरूप ही है। गुण का भी परिवर्तन स्वरूप के कारण ही होता है, जिस द्रव्य पर जैसा स्वरूप आरोपित किया जाता है, वह उसी गुण का हो जाता है। आधुनिक भौतिकवादरक्ष के अनुसार विभिन्न भौतिक पदार्थों में अन्तर माना जाता है, जैसे- सोना-चाँदी आदि, परन्तु अरस्तू को यह मान्य नहीं है। उसके अनुसार द्रव्य अपने आप में कोई गुण नहीं रखता, उससे सब कुछ बनाया जा सकता है।

साधारणतः Potentiality द्रव्य में होता है और Actuality form में। Potentiality द्रव्य की वह शक्ति है जिससे किसी वस्तु का होना होता है। द्रव्य में Potentiality जब दूसरे रूप में आ जाता है तब वह Actuality कहलाता है अतः उसी तरह अरस्तू Potentiality और Actuality में भेद करता है अतः प्रत्येक परवर्ती इकाई, पूर्ववर्ती इकाई के लिए स्वरूप है और प्रत्येक पूर्ववर्ती इकाई परवर्ती इकाई के लिए द्रव्य है। विकास के क्रम में हम जितना ही आगे बढ़ते जाते हैं स्वरूप की मात्रा बढ़ती जाती है और जितना ही पीछे की ओर अग्रसर होते हैं स्वरूप की मात्रा घटती जाती है। इसी तरह विकास की अन्तिम अवस्था में स्वरूप का चरम उत्कर्ष होता है और द्रव्य का अपकर्ष पाया जाता है और यही Absolute का ईश्वर है। विकास की आरम्भिक काल में जो इकाई आयेगी उसमें स्वरूप का अभाव रहेगा वह केवल शुद्ध द्रव्य ही होगा। यह बिल्कुल निरपेक्ष, निराकार, निर्गुण होगा और सभी का अधिष्ठान भी होगा। अब प्रश्न यहाँ आता है कि यदि जगत् के अधिष्ठान तत्व द्रव्य में रूप और गुण नहीं है तो जगत् की सृष्टि कैसे होगी। परन्तु अरस्तू का कहना है कि ~~निहित~~ ~~सत्कार्यवादी~~ कार्य किसी न किसी रूप में अपने कारण में निहित ~~सत्कार्यवादी~~ रहता है। इसी प्रकार वह सत्कार्यवादी भी है अतः प्रारम्भिक द्रव्य बिल्कुल निर्गुण, निराकार और निराकृत नहीं हो सकता और

में अन्तिम द्रव्य ही पदार्थहीन होगा। अरस्तू के अनुसार द्रव्य और स्वरूप में जो युद्धता की बात की गई है वह निरर्थक है। संसार की प्रत्येक वस्तु निम्नतर से उच्चतर तक में द्रव्य और स्वरूप का समावेश पाया जाता है। अतः द्रव्य में किसी भी तरह के परिवर्तन होने की क्षमता पायी जाती है। अतः दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि द्रव्य प्रत्येक वस्तु की साध्यता है परन्तु द्रव्य के अतिरिक्त एक अन्य वस्तु भी है जो उसके स्वभाव को निर्धारित करती है और वह उसका स्वरूप है जो साध्य रूप में उसके भीतर निहित रहता है। अरस्तू का कहना है कि संसार में जितने गति परिवर्तन और परिणाम हैं वे सभी साध्यता से सिद्धता अथवा द्रव्य से स्वरूप की ओर संक्रमण के उदाहरण हैं।

अतः अरस्तू प्राचीनकाल के परिणामवाद की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है, असत केवल असत को ही उत्पन्न कर सकता है। और सत केवल सत को ही जन्म दे सकता है। इसी तरह काल की दृष्टि से द्रव्य स्वरूप से पहले आता है पर विचार की दृष्टि से स्वरूप द्रव्य से पहले आता है। इस प्रकार 'अन्त' 'आदि' में निहित है 'लक्ष्य' उपादान में ही विद्यमान है। सम्पूर्ण परिणाम का रहस्य लक्ष्य या उद्देश्य की प्राप्ति है और उसी से प्रेरित होती है इससे यह भी स्पष्ट होता है कि 'लक्ष्य' ही वास्तव में परिणाम का प्रवर्तक कारण है। 'लक्ष्य सम्पूर्ण सृष्टि प्रक्रिया में व्याप्त रहता है।

लेकिन Mill और न्याय, वैशेषिक दार्शनिक के अनुसार कारण कार्य से पहले आता है परन्तु अरस्तू का कहना है कि यह पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि लक्ष्य ही वास्तविक कारण है और लक्ष्य यदि आदि में उपस्थित नहीं होता है तो क्रिया का प्रारम्भ कैसे होगी? "अतः क्रिया की उत्पत्ति के लिए कारण को आदि, मध्य एवं अन्त तीनों अवस्था

में रहना चाहिए। इन सारी बातों को देखने से पता चलता है कि इनमें आपस में विरोध है, पर तात्विक दृष्टि से देखने पर इसमें कोई विरोधाभास नहीं दिखलायी पड़ता। अतः सम्पूर्ण विश्व द्रव्य और स्वरूप का ही रूप है। इसी से सृष्टि की रचना होती है।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि अरस्तू के अनुसार द्रव्य और स्वरूप दो ऐसे पदार्थ हैं जो स्वभाव से भिन्न होते हुए भी ये दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते हैं। Plato ने भी दो सत्ता की बात की थी पर वह दोनों को एक-दूसरे से भिन्न माना था यानि व्यवहारिक और पारमार्थिक सत्ता में अन्तर किया था। उसके अनुसार विज्ञान से विशेष अलग है परन्तु अरस्तू का विचार Plato के विचार से भिन्न था। उनका कहना था कि स्वरूप और द्रव्य कभी भी पृथक-पृथक नहीं रह सकता।